gradeup SUPER

Rajasthan RVUNL

Hindi

Important Formulae Notes

Sahi Prep Hai Toh Life Set Hai

www.gradeup.co

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा- मुहावरे का अर्थ है बातचीत या अभ्यास। यह अरबी भाषा का शब्द है। जब कोई वाक्य का अंश मूल अर्थ से हट कर किसी विशेष अर्थ को दर्शाता है, उसे मुहावरा कहते हैं। मुहावरा भाषा को सुन्दर बनाता है। मुहावरे का प्रयोग वाक्य के बीच में होता है।

लोकोक्ति- लोकोक्तियाँ लोक-अनुभव से बनती हैं। किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर- मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।

जैसे-'अंधा बनाना' मुहावरा है। 'ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना' लोकोक्ति है।

• अंग-अंग खिल उठना

- प्रसन्न हो जाना।

• अंग छूना

- कसम खाना।

• अंग-अंग टूटना

– सारे बदन में दर्द होना।

• अंग-अंग ढीला होना

– बहुत थक जाना।

• अंग-अंग मुसकाना

– बहुत प्रसन्न होना।

• अंग-अंग फूले न समाना

– बहुत आनंदित होना।

• अंगड़ाना

– अंगड़ाई लेना, जबरन पहन लेना।

• अंकुश रखना

– नियंत्रण रखना।

•अंग लगाना

– लिपटाना।

• अंडा सिखावे बच्चे को चीं-चीं मत कर

– छोटे के द्वारा बड़े को उपदेश देना।

• अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई

– परिश्रम कोई करे लाभ किसी और को मिले।

• अंत भले का भला

– भलाई करने वाले का भला ही होता है।

• अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को देय

– अपने अधिकार का लाभ अपने लोगों को ही पहुँचाना।

• अंधा क्या चाहे, दो आँखें

– मनचाही वस्तु प्राप्त होना।

• अंधा क्या जाने बसंत बहार

– जो वस्तु देखी ही नहीं गई, उसका आनंद कैसे जाना जा सकता है।

• अंधे अंधा ठेलिया दोनों कूप पड़ंत

– दो मूर्ख एक दूसरे की सहायता करें तो भी दोनों को हानि ही होती है।

• अंधे की लाठी

– बेसहारे का सहारा।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

हिन्दी भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते है। जिससे अपने विचारों या भावों को थोड़े-से-थोड़े शब्दों में व्यक्त कर सके।

उदाहरण - "जो स्त्री कवित करती है" वाक्यांश के लिए एक शब्द "कवयित्री" है।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के उदाहरण -

शब्द	<=>	वाक्यांश
जिसके शीश पर चंद्रमा हो	<=>	चंद्रशेखर
जिसके आने की तिथि मालूम ना हो	<=>	अतिथि
जिसका ईश्वर में विश्वास ना हो	<=>	आस्तिक
जानने की इच्छा	<=>	जिज्ञासा
जिसके हृदय में दया ना हो	<=>	निर्दयी
जिसके पार देखा जा सकता है	<=>	पारदर्शी
जिसकी चार भुजाएं हो	<=>	चतुर्भुज
जिसके हृदय में ममता ना हो	<=>	निर्मम
जिसके पार न देखा जा सके	<=>	अपारदर्शक
साथ पढ़ने वाला	<=>	सहपाठी
जिसके दस शीश हो	<=>	दशानन

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसके सम्बन्ध का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं।

उदाहरण - श्रीराम ने रावण को बाण से मारा

यहाँ 'ने' 'को' 'से' शब्दों ने वाक्य में आये अनेक शब्दों का सम्बन्ध क्रिया से जोड़ दिया है। यदि ये शब्द न हो तो शब्दों का क्रिया के साथ तथा आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होगा। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाले शब्द कारक कहलाते है।

कारक के भेद - हिन्दी में कारकों की संख्या आठ है –

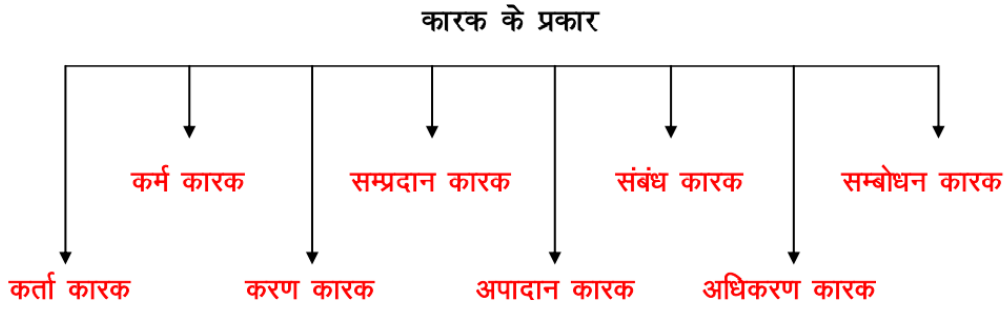

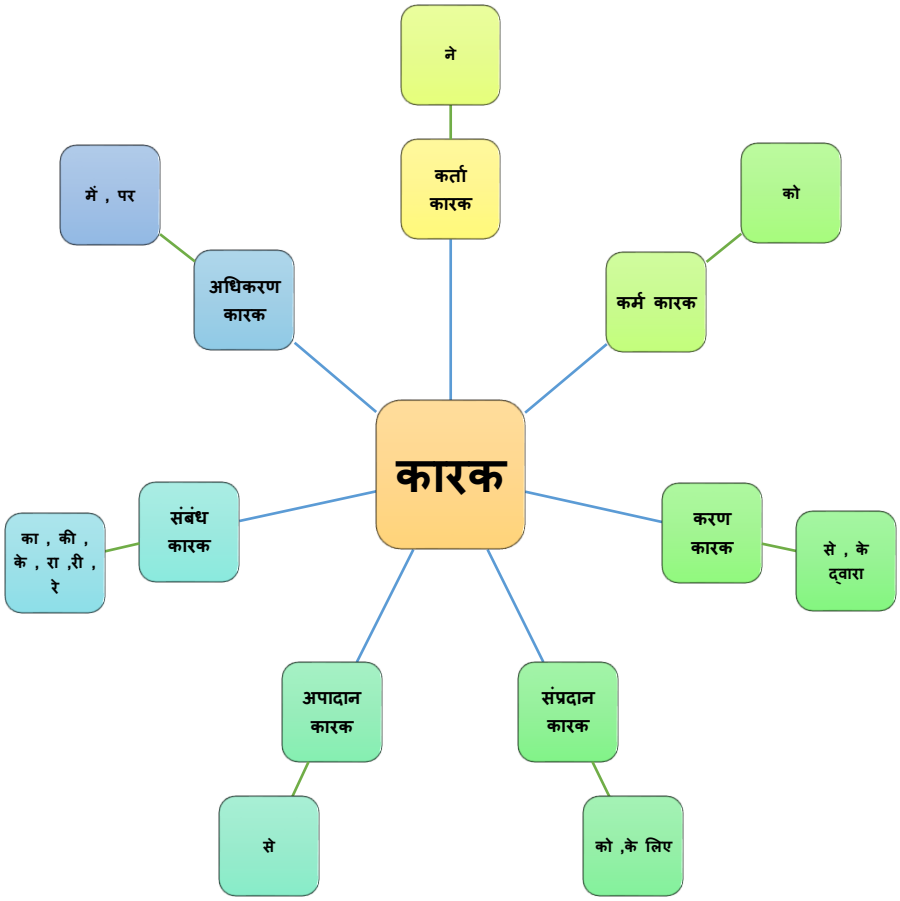

कारक के विभिन्न चिह्न -

कारक	चिह्न	अर्थ
कर्ता	ने	काम करने वाला
कर्म	को	जिस पर क्रिया का फल पड़ता है
करण	से, द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करें
सम्प्रदान	को,के लिए	जिस साधन से क्रिया की गयी हो
अपादान	से	जिससे प्रथकता का भाव प्रकट हो
सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे	क्रिया के अतरिक्त अन्य पदों से सम्बन्ध
अधिकरण	में,पर	क्रिया करने का स्थान
संबोधन	हे! अरे! अजी!	किसी को पुकारना, बुलाना

(A).तत्सम शब्द - जो शब्द संस्कृत से हिंदी भाषा में बिना किसी परिवर्तन के अपना लिये जाते है । उन्हें तत्सम शब्द कहते है तत् का अर्थ "उसके" और सम् का अर्थ "समान" इस प्रकार जो शब्द संस्कृत के समान होते है या जो शब्द बिना विकृत हुए संस्कृत से ज्यों के त्यों हिंदी भाषा में आ जाते है उन्हें तत्सम शब्द कहते है ।

(B).तद्भव शब्द - तद्भव शब्द वे शब्द हैं जिनमें थोड़ा सा परिवर्तन करके हिंदी में प्रयुक्त किया जाता हैं अर्थात संस्कृत शब्दों का बदला हुआ रूप तद्भव शब्द होते है ।

तत्सम और तद्भव शब्दों को पहचानने के नियम -

(1) तत्सम शब्दों में ' श्र ' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ' स ' का प्रयोग हो जाता है।

(2) तत्सम शब्दों में ' श ' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ' स ' का प्रयोग हो जाता है।

(3) तत्सम शब्दों में ' व ' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ' ब ' का प्रयोग होता है।

(4) तत्सम शब्दों के पीछे ' क्ष ' वर्ण का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों के पीछे ' ख ' या ' छ ' शब्द का प्रयोग होता है।

पर्यायवाची

'पर्याय' का अर्थ है- 'समान' तथा 'वाची' का अर्थ है- 'बोले जाने वाले' अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

पर्यायवाची शब्दों के कुछ उदाहरण -

अमृत	सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक ।
अतिथि	मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।
अग्नि	आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, धूमकेतु, अनल, पावक, वह्नि , कृशानु,
अनुपम	अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्‌वितीय, अदभुत, अनन्य।
असुर	यातुधान, निशाचर, रजनीचर, दनुज, दैत्य, तमचर, राक्षस, दानव, रात्रिचर, इन्द्रारि ।
अहंकार	दंभ, गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड, मान।
अर्थ	धन, द्रव्य, मुद्रा, दौलत, वित्त, पैसा।
अश्व	हय, तुरंग, घोड़ा, घोटक, हरि, सैन्धव ,वाजि, सैन्धव।
अंधकार	तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।
अरण्य	जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।
अनी	कटक, दल, सेना, फौज, चमू, अनीकिनी।
अनादर	अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, अवमानना, तिरस्कार।
अंकुश	नियंत्रण, पाबंदी, रोक, दबाव।
अंजाम	नतीजा, परिणाम, फल।
अंत	समाप्ति, अवसान, इति, इतिश्री, समापन।
अंतर	भिन्नता, असमानता, भेद, फर्क।
अंतरिक्ष	खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।
अंतर्धान	गायब, लुप्त, ओझल, अदृश्य।
अंबुनिधि	समुंदर, सागर, सिंधु, जलधि, जलनिधि जलेश।
अक्ल	प्रज्ञा, मेधा, मति, बुद्‌धि, विवेक।
अगम	दुष्कर, कठिन, दुःसाध्य, अगम्य।
अच्छा	बढ़िया, बेहतर, भला, चोखा, उत्तम।
अटल	अविचल, अडिग, स्थिर, अचल।
अधीन	मातहत, आश्रित, पराश्रित, परवश, परतंत्र।
अनाज	अन्न, गल्ला, नाज, खाद्‌यान्न।
अनुरोध	विनय, विनती, आग्रह, प्रार्थना।
अभद्र	असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट

लिंग

लिंग का शाब्दिक अर्थ होता है - चिह्न। संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते है।

- मोहन पढ़ता है। (पढ़ता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढ़ती' है।)
- गीता गाती है। (यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है।)

पुल्लिंग शब्द - जिन संज्ञा शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता है, उसे पुलिंग कहते है।

जैसे - पिता, राजा, घोड़ा, बन्दर, हंस, बकरा, लड़का इत्यादि।

पुल्लिंग की पहचान -

1. कुछ संज्ञाएँ हमेशा पुल्लिंग रहती है-

जैसे - खटमल, भेड़या, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी, आदि।

2. दिनों के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं| -

जैसे - सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि।

3. नक्षत्रों के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं| -

जैसे - सूर्य, चन्द्र, राहू, शनि, आकाश, बृहस्पति, बुध आदि। (अपवाद- पृथ्वी-स्त्रीलिंग)

4. धातुओं के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं|

जैसे - सोना, तांबा, पीतल, लोहा, आदि।

5. वृक्षों, फलो नाम सभी पुल्लिंग होते हैं|

जैसे - अमरुद, केला, शीशम, पीपल, देवदार, चिनार, बरगद, अशोक, पलाश, आम आदि।

6. अनाजों के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं

जैसे - गेहूँ, बाजरा, चना, जौ आदि। (अपवाद- मक्की, ज्वार, अरहर, मूँग-स्त्रीलिंग)

7. रत्नों के नाम-

जैसे - नीलम, पुखराज, मूँगा, माणिक्य, पन्ना, मोती, हीरा आदि।

8. देशों और नगरों के नाम-

जैसे - दिल्ली, लन्दन, चीन, रूस, भारत आदि।

9. द्वीप के नाम

जैसे - अंडमान-निकोबार, जावा, क्यूबा, न्यू फाउंडलैंड आदि।

10. सागर के नाम

जैसे - हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर आदि।

11. शरीर के अंग -

जैसे - हाथ, पैर, गला, अँगूठा, कान, सिर, मस्तक, मुँह, घुटना, ह्रदय, दाँत आदि।

(अपवाद- जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ-स्त्रीलिंग)

12. महीनो के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं| -

जैसे - फरवरी, मार्च, चैत, वैशाख आदि। (अपवाद- जनवरी, मई, जुलाई-स्त्रीलिंग)

13. पर्वतों के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं| -

जैसे - हिमालय, सतपुड़ा, आल्प्स , यूराल , कंचनजंगा , एवरेस्ट , फूजीयामा आदि।

14. देशों के नाम सभी पुल्लिंग होते हैं| -

जैसे - भारत, चीन, इरान, अमेरिका आदि।

स्त्रीलिंग शब्द - जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है।

जैसे - माता, रानी, घोड़ी, कुतिया, बंदरिया

स्त्रीलिंग की पहचान -

A. स्त्रीलिंग शब्दों के अंतर्गत नक्षत्र, नदी, बोली, भाषा, तिथि, भोजन आदि के नाम आते हैं-

1. कुछ संज्ञाएँ हमेशा स्त्रीलिंग रहती है- मक्खी ,कोयल, मछली, तितली, मैना आदि।

2. समूहवाचक संज्ञायें भी स्त्रीलिंग होती हैं

जैसे - भीड़, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि।

3. नक्षत्र के नाम भी स्त्रीलिंग में होते हैं|

जैसे - अश्विनी, रेवती, मृगशिरा, चित्रा, भरणी, रोहिणी आदि।

4. बोली के नाम भी स्त्रीलिंग में होते हैं|

जैसे - मेवाती, ब्रज, खड़ी बोली, बुंदेली आदि।

5. नदियों के नाम भी हमेशा स्त्रीलिंग में होते हैं|

जैसे - रावी, कावेरी, कृष्णा, यमुना, सतलुज, रावी, व्यास, गोदावरी, झेलम, गंगा आदि।

6. भाषाओं व लिपियों के नाम

जैसे - देवनागरी, अंग्रेजी, हिंदी, फ्रांसीसी, अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली आदि।

7.पुस्तकों के नाम भी हमेशा स्त्रीलिंग में होते हैं|

जैसे :- रामचरितमानस, रामायण, बाइबल, गीतांजलि, किताब, गीता इत्यादि|

8. तिथियों के नाम भी स्त्रीलिंग में होते हैं|

जैसे - पूर्णिमा, अमावस्था, एकादशी, चतुर्थी, प्रथमा आदि।

9. आहारों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं

जैसे - सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी आदि।

अपवाद- हलुआ, अचार, रायता आदि।

रस का शाब्दिक अर्थ है - आनंद। काव्य को पढने व सुनने से जो आनंद प्राप्त होता है, रस कहलाता है। रस को 'काव्य की आत्मा' माना जाता है।

- **परिभाषा - काव्य को पढ़ते या सुनते समय जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहा जाता है।**
- **रस उत्पत्ति को सबसे पहले परिभाषित करने का श्रेय भरत मुनि को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'नाट्यशास्त्र' में आठ प्रकार के रसों का वर्णन किया है। किन्तु अभिनव गुप्त ने 9 रसों को मान्यता दी अत: वर्तमान में 9 रस माने जाते है।**
- **भरतमुनि ने लिखा है- विभावानुभाव-व्यभिचारी-संयोगाद् रसनिष्पत्तिः अर्थात विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।**

वचन

वचन - वचन का अर्थ संख्या से है । विकारी शब्द के जिस रूप से उनकी संख्या का बोध होता है उसे वचन कहते है ।

वचन के प्रकार - वचन के दो प्रकार होते है।

(1) एकवचन

(2) बहुवचन

1.एक वचन - शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक पदार्थ का बोध हो एक वचन शब्द होते है।

जैसे - बालक , लड़का , पुस्तक , मेज आदि ।

2.बहु वचन - शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओ का बोध होता है, वे शब्द बहुवचन होते है।

जैसे - किताबें , कुर्सियां , आदि ।

विसर्ग संधि - विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे विसर्ग-संधि कहते हैं।

उदाहरण –

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

नियम 1. यदि विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद 3,4,5 वर्ण हो या य,र,ल,व,ह हो या अ हो तो विसर्ग का ओ हो जाता हैं

नियम 2. यदि विसर्ग के पहले इ,ई,उ,ऊ हो और विसर्ग के बाद 3,4,5,वर्ण हो या य,र,ल,व,ह हो तो विसर्ग का र् हो जाता हैं।

नियम 3. विसर्ग के बाद च,छ,श हो, तो विसर्ग का श् का हो जाता है।

नियम 4. पहले स्वर : + त,थ,स = विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

नियम 5. यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ से अतरिक्त कोई अन्य स्वर हो तथा विसर्ग के बाद क,ख,ट,प,फ हो तो विसर्ग ष् में परिवर्तित हो जाता है।

नियम 6. अ स्वर : + अन्य स्वर = विसर्ग का लोप

नियम 7. यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ से अतरिक्त कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद र् हो तो, विसर्ग के पूर्व के स्वर का लोप हो जाता है और वह दीर्घ हो जाता हैं।

संधि - संधि का अर्थ मेल होता है दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं। इसमें पूर्व पद का अंतिम वर्ण और पर पद का पहला वर्ण दोनों के मेल से जो शब्द बनता हैं उसे संधि शब्द कहते है।

संधि विच्छेद - संधि शब्द को अलग करना संधि विच्छेद कहलाता है।

उदाहरण –

गिरीन्द्र (संधि शब्द) = गिरि + इन्द्र (संधि विच्छेद)

देव्यागम = देवी (पूर्व पद का अंतिम वर्ण) + आगम (पर पद का पहला वर्ण)

अलंकार

अलंकार शब्द की रचना 'अलम् + कार' के योग से हुई है। अलम् का अर्थ शोभा और कार का अर्थ करने वाला, जो शोभा में वृद्धि करता है उसे अलंकार कहते हैं। सुंदरता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाले वे साधन जो सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं। कविगण कविता रूपी कामिनी की शोभा बढ़ाने हेतु अलंकार नामक साधन का प्रयोग करते हैं। इसीलिए कहा गया है - 'अलंकरोति इति अलंकार।'

परिभाषा - अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है 'आभूषण'। काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते है।

A.अनुप्रास अलंकार – जहां पर किसी वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे –

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये ।।

B. यमक अलंकार – जहां एक या एक से अधिक शब्द एक से अधिक बार आये और हर बार अर्थ अलग अलग हो वहाँ पर यमक अलंकार होता है ।

जैसे-

- **कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय ।**

वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय ।।

C.श्लेष अलंकार – श्लेष का अर्थ है – चिपका हुआ। जहां एक शब्द में अनेक अर्थ छिपे हों अर्थात् जब वाक्य में एक शब्द केवल एक बार आए और उस शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलें तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे -

रहिमन पानी राखियै बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरै मोती , मानुस , चून।।

D.वक्रोक्ति अलंकार - जहां किसी बात पर वक्ता और श्रोता की किसी उक्ति के सम्बन्ध में, अर्थ कल्पना में भिन्नता का आभास हो, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे -

'को तुम हो? इत आये कहाँ?घनस्याम हैं, तो कितहूँ बरसो।'

E.पुनरुक्ति अलंकार -

पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है - पुन: +उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण -

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।

राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी।।

****